इक्कीसवीं सदी
औपनिवेशिक मानसिकता और भाषा

सम्पादक : हर्षबाला शर्मा

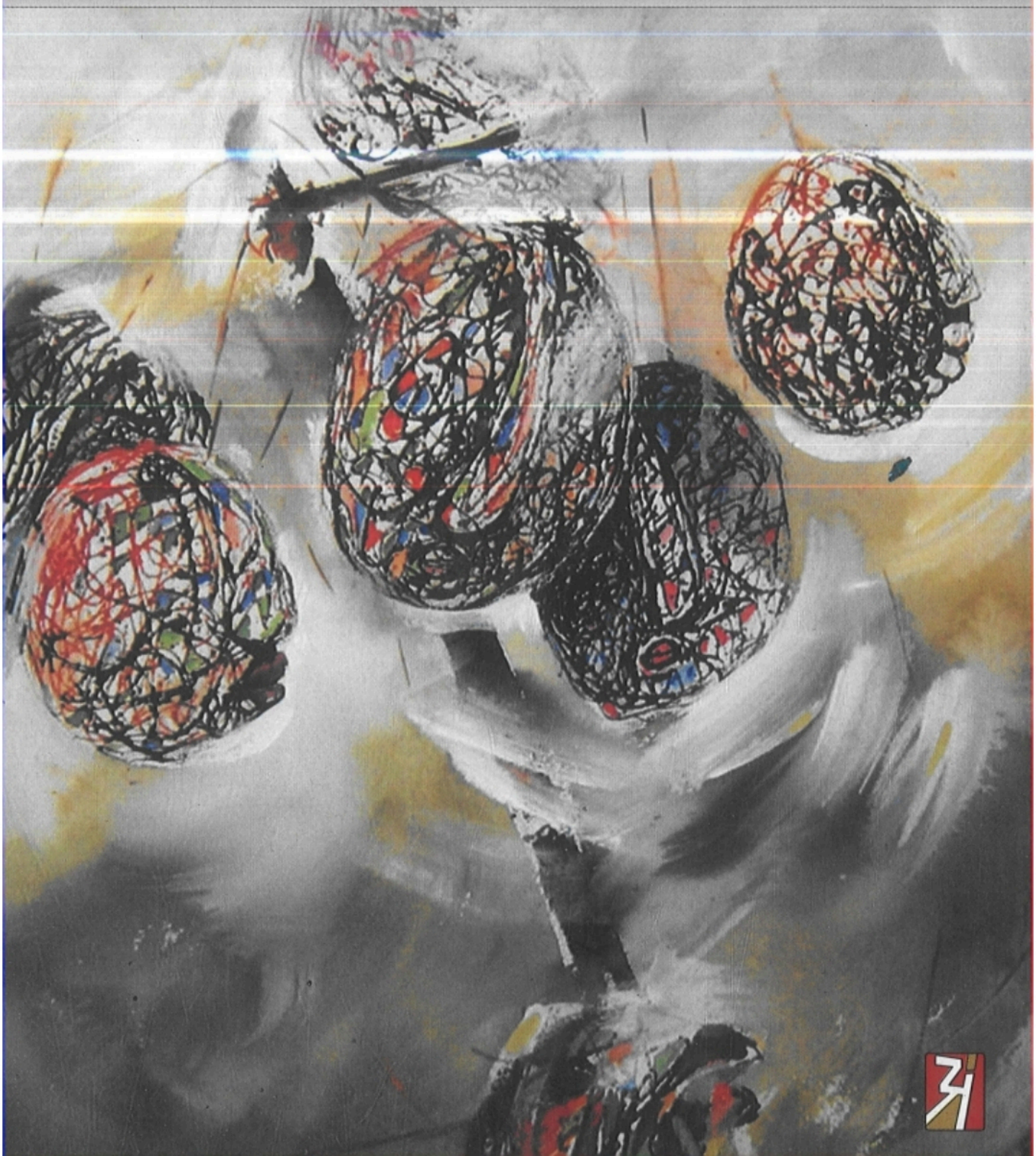

वारेन हेस्टिंग्स का साँड़
उत्तर औपनिवेशिक समय का ऐतिहासिक पाठ

डॉ. रेखा सेठी
हिंदी विभाग, इन्द्रप्रस्थ कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

''दो सौ साल के बाद जब अंग्रेज मालामाल होकर वापस अपने वतन इंग्लैंड लौटेंगे तब भी इंडिया में उनके जैसे ही नेटिवों का राज होगा। ...उनके कपड़े, विचार, स्वप्न और आकांक्षाएँ अंग्रेज होंगी।''

ये पंक्तियाँ उदय प्रकाश की कहानी 'वारेन हेस्टिंग्स का साँड़' से हैं। उत्तर-औपनिवेशिक मानसिकता से पूर्ण समय और समाज का आलोचनात्मक विमर्श उदय प्रकाश की कहानियों का प्राण है। अपनी अलग-अलग कहानियों में उन्होंने सिलसिलेवार ढंग से भारत के औपनिवेशिक इतिहास और भूमंडलीकरण से पैदा होती नव-साम्राज्यवादी हकीकत के अमानवीय पहलुओं पर तीखा प्रहार किया है। अपनी लगभग हर कहानी में लेखक सत्ताकामी, ताकतवर वर्गों के वर्चस्व से दबी कुचली असंख्य मानव जातियों के संघर्ष की अमिट दास्तान सुनाता है।

1997 में जब यह कहानी अपने सबसे पहले रूप में इंडिया टुडे के साहित्य वार्षिकी विशेषांक में छपी थी तो साहित्य की दुनिया में हड़कंप मच गया। समय और स्पेस की सीमाओं का अतिक्रमण कर इसमें अतीत, वर्तमान और भविष्य का जैसा ग्राफ बन रहा था उससे उसकी तरह-तरह की व्याख्याएँ और कठोर आलोचनाएँ हुई। किसी ने इसका संबंध हिंदू पुनर्जागरण से जोड़ा तो किसी ने उसे/सामान्य औसत रचना कहकर खारिज कर दिया लेकिन आज, लगभग पंद्रह साल बीत जाने पर भी यह कहानी उत्तर औपनिवेशिक समय और समाज का ऐतिहासिक पुनर्पाठ प्रस्तुत करती है। वर्तमान सामाजिक ढाँचे की चरमराहट ढाई सौ साल पुराने इतिहास की अनुगूँज बनकर उभरती है।

1757 में पलासी युद्ध के उपरांत लॉर्ड क्लाइव की टिप्पणी—''मैं सिर्फ यह

कहूँगा कि अराजकता का ऐसा दृश्य ऐसा भ्रम, ऐसी घूसखोरी और बेईमानी, ऐसा भ्रष्टाचार और ऐसी लूट-खसोट जैसी हमारे राज में आज दिखाई दे रही है, वैसी किसी और देश में न कभी सुनी गई, न कभी देखी गई। अचानक धनाढ्यों की बेइंतहा दौलतपरस्ती ने विलासिता और भोग के भीषण रूप को चारों तरफ पैदा कर दिया है। इस बुराई से हर डिपार्टमेंट का हर सदस्य प्रभावित है। हर छोटा मुलाजिम ज्यादा से ज्यादा धन हड़पकर बड़े मुलाजिम या अधिकारी के बराबर हो जाना चाहता है। क्योंकि वह यह जानता है कि सम्पत्ति और ताकत ही उसे बड़ा बना रही है। कोई ताज्जुब नहीं कि दौलत की इस हवस को पूरा करनेवाले साधन इन लोगों के वे 'अधिकार' हैं, जो इन्हें उत्तरदायित्वपूर्ण ढंग से प्रशासन चलाने के लिए दिए गए हैं। विडंबना है कि ये 'साधन' सिर्फ रिश्वतखोरी जैसे भ्रष्ट आचरण के लिए ही नहीं, लूट-खसोट और ठगी-जालसाजी के लिए भी इस्तेमाल हो रहे हैं। इसकी मिसालें ऊपर के पदों पर बैठे लोगों ने कायम की हैं, तो भला नीचे के लोग उसका अनुसरण करने में नाकामयाब क्यों रहें ?

यह रोग सर्वव्यापी है। यह नागरिक प्रशासन, पुलिस और फौज ही नहीं लेखकों, कलमनवीसों और व्यापारियों तक को अपनी चपेट में ले चुका है।"[2]

यदि इन पंक्तियों का संदर्भ अदृश्य कर दिया जाए तो यह विवरण स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज का आईना बन जाता है। लेखक ने टिप्पणी की है, "और यही वह बिंदु है जहाँ ढाई सौ साल पहले की कहानी आज की कहानी बनती है"[3] अर्थात् कहानी का उद्देश्य अतीत का उत्खनन न होकर वर्तमान की पहचान है। लेखक अपने समय की उत्तर औपनिवेशिक सच्चाइयों को उपनिवेशवाद के इतिहास से गुजरकर परखना चाहता है। अतीत और वर्तमान एक दूसरे का संदर्भ बनकर नए दृष्टिबोध को जन्म देते हैं। यद्यपि कहानी के आरंभ में ही लेखक ने स्पष्ट कहा है कि इस कहानी में इतिहास उतना ही है जितना दाल में नमक होता है फिर भी यह देखना रोचक होगा कि उस नमक-मात्र इतिहास को लेखक ने कहानी में कैसे पिरोया है।

वारेन हेस्टिंग्स और उपनिवेशवाद का उदय

इतिहास के पन्नों में वारेन हेस्टिंग्स उस व्यक्ति की तरह दर्ज है जो हिंदुस्तान का पहला गवर्नर जनरल बना। लार्ड क्लाइव के बाद उसने ही यहाँ ईस्ट इंडिया कंपनी की बागडोर संभाली। उसने भारतीय ग्रंथों के अंग्रेजी अनुवाद कराए, देश का नक्शा बनवाया। स्थायी-भूमि बंदोबस्त और राजस्व के नए नियम लागू किए। उसकी प्रशासनिक नीतियों के इतने व्यापक प्रभाव पड़े कि आने वाले दौ सौ वर्षों के लिए भारत अंग्रेजों का उपनिवेश बन गया।

इस कहानी में वारेन हेस्टिंग्स को मुख्य पात्र बनाकर औपनिवेशिक प्रक्रिया को उसके माध्यम से साकार किया गया है। वह मात्र व्यक्ति नहीं, सत्ता का प्रतिनिधि है। वह हिंदुस्तान और यहाँ की संस्कृति से अभिभूत भी है और आतंकित भी। कहानी के आरंभिक हिस्से में वारेन हेस्टिंग्स की उपस्थिति उस गौरवर्णी किशोर के रूप में है जो हिंदुस्तान और उसके निवासियों को अजीबोगरीब हैरत के साथ देखता है। जैसे एलिस इन वंडरलैंड में सब कुछ एक अजूबा है उसी तरह वारेन हेस्टिंग्स के लिए हिंदुस्तान रहस्य-रोमांच भरी दुनिया है। मालिन, नटनी जैसी औरतें उसके लिए आश्चर्यजनक ढंग से रहस्यपूर्ण हैं। उसके सामने दुर्गा का बिंब है—शेर पर आसीन, एक हाथ में कटा हुआ पुरुष मुंड और होठों पर लाल खून के निशान वह उसे देखकर भीतर तक दहल जाता है। उसे यहाँ की सब औरतें लगभग उसके जैसी ही दिखती हैं। उसके मन में दो ख्याल लगभग एक साथ ही जन्म लेते हैं, "ओह जीसस, व्हेयर द हेल आयम।" और दूसरा, "मुकाबला कठिन है। हमें इनको ही गुलाम बनाना है।"

कहानी में यह सारा चित्रण हमें उपनिवेशवाद की प्रक्रिया को गहरी अंतर्दृष्टि से परखने का मौका देता है। वारेन हेस्टिंग्स विदेशी निगाह से अपने आस-पास की हर चीज को देखने की कोशिश कर रहा है। यहाँ के हवा-पानी, मिट्टी, यहाँ के लोगों से उसका कोई संबंध नहीं। उसके मन में अनजाने परिवेश का भय तो है ही साथ ही यह उद्देश्य भी साफ है कि उसे इन्हीं लोगों को गुलाम बनाना है। मुगल-शासकों की तरह यहाँ रच-बस जाना, इस मिट्टी में एक रंग होकर घुल जाना उसका लक्ष्य नहीं है लेकिन फिर भी कुछ है जो उसे सम्मोहित करता है।

इतिहासकारों को भी ये सवाल मथते रहे हैं कि वारेन हेस्टिंग्स ने भारत और भारतीय संस्कृति में जो विशेष रुचि दिखाई उसके क्या कारण हो सकते हैं। ऐसा माना जाता है कि वह भारतीय मानसिकता को भली प्रकार जानना समझना चाहता था जिससे औपनिवेशिक व्यवस्था को सुदृढ़ किया जा सके। उसके दृष्टिकोण को स्पष्ट करने वाली उसकी एक टिप्पणी : बनार्ड एस कोहन की किताब 'Colonialism and its forms of knowledge : The British in India' में उद्धृत है : "Every Application of knowledge and especially such as is obtained in social commnication with people, over whom we exercise dominion, founded on the right of conquest, is useful to the state..it attracts and conciliates distant affections it lessons the weight of the chain by which the natives are held in subjection and it imprints on the hearts of our countrymen the sense of obligation and benevolence... Every instance which brings their real character will

impress us with more generous sense of feeling for fheir natural rights, and teach us to estimate them by the measure of our own.. But such instances can only be gained in their writings, and these will survive when British domination in India shall have long ceased to exist, and when the sources which once yielded of wealth and power are lost to remembrance''[4] भारतीय ग्रंथ और स्मृतियाँ अंग्रेजों के लिए जानकारी के स्रोत थे। ऐसी जानकारी जो अंततः अंग्रेजों के लिए अपने शासन की जड़े फैलाने में लाभकारी सिद्ध हुई। वारेन हेस्टिंग्स ने भारत की जाति व्यवस्था तथा धार्मिक विभिन्नता को कुशलतापूर्वक अंग्रेजों के पक्ष में इस्तेमाल किया।

कहानी में उदय प्रकाश ने इन ऐतिहासिक साक्ष्यों का उपयोग कोलोनाइजेशन का मिथ रचने के लिए किया है। महीन कल्पना से रचे गए कहानी के इस हिस्से में वारेन भारत की वाचिक परंपराओं से पूर्णतः सम्मोहित दिखाई पड़ता है। जयदेव, राधा-कृष्ण से जुड़ी दंत कथाएँ, संगीत, कलाएँ, मिथ और स्मृतियाँ सब उसे अभिभूत किए दे रहे हैं। वह यहाँ की वासंती हवा के खुमार को अनुभव करता है। बुंतू अब्दुल कादिर और चोखी उसके मीत है। लेखक ने चोखी के रूप में वॉरेन की नेटिव प्रेयसी की कल्पना की है जिसके साथ वह कृष्ण बनकर रास रचाता है। इस प्रेम-कथा में वह उन्माद और मुक्ति की पींग पर सवार हिंदुस्तान को एक अलग रूप में पहचानता है लेकिन उसका असली एजेंडा उसकी आँखों से कभी ओझल नहीं होता। वह शेक्सपियर की मार्फत याद करता है ''इफ यू हैव टु डिफीट देम, यू हैव टु किल देयर मेमोरीज। यू हैव टु डिस्ट्रॉय देयर पास्ट। यू हैव टु शूट देयर स्टोरीज।''[5] आश्चर्य सम्मोहन और औपनिवेशिक एजेंडा—इस कहानी में वारेन हेस्टिंग्स का व्यक्तित्व इन सभी बिंदुओं का समाहार है। कहानी में वारेन और चोखी का प्रेम प्रसंग एक झटके से खत्म होता है। जब चोखी यह जान लेती है कि वारेन ने इस देश का नक्शा बनवाया है तब अपने सहज आंतरिक बोध से वह समझ लेती है कि वह इस देश को मिटा डालना चाहता है और इसकी सजा वह उसे इस रूप में देती है कि अपनी कोख में पलने वाले उसके बीज को खत्म करने के लिए स्वयं को मिटा डालती है। चोखी वारेन के जीवन में आत्मीयता-कोमलता का अंश है। उसके परिदृश्य से हटते ही रास रचाने वाला, स्वप्न जीवी वारेन, व्यावहारिक, क्रूर, सत्ताधारी प्रशासक में बदल जाता है!

संस्कृतियों की टकराहट

इस कहानी का एक अन्य आयाम दंतकथाओं, मिथकों विश्वासों पर टिकी भारतीय संस्कृति को रेनेसां और 'एज ऑफ रीजन' से उदित पश्चात्य संस्कृति के बरक्स

रखकर देखने और आँकने का भी है। एक ओर भारतीय संस्कृति का एक रूप है जहाँ एक आकृति की भी अनेक जीवित कथाएँ हैं। ''वारेन हेस्टिंग्स को पता चला कि इस देश के इतने ग्रंथ और अभिलेख हैं और इतनी दंत्यकथाएँ और मिथक गाथाएँ मौखिक रूप में प्रचलित हैं कि अगर उन्हें पूरी पृथ्वी पर फैला दिया जाए तो उनकी अनगिनत परतों के नीचे यूरोप, अमेरिका, एशिया और अफ्रीका ही नहीं, सारे समुद्र भी ढँक जाएँगे।''[6] वारेन हेस्टिग्स के लिए यह विलक्षण अनुभव था कि भारत जैसा विशाल देश इन मौखिक कथाओं में सप्राण था। जिस समय वह हिंदुस्तान के इस अलिखित इतिहास पर विस्मित हो रहा था उस समय इंग्लैंड में एज ऑफ रीजन का उदय हो चुका था, ''वहाँ तो महान रोम और इटली के प्रभाव और प्रेरणा से रेनेसा आ चुका था। चाउसर, सस्यूर, दांते, शेक्सपीयर, होमर की वाणी वहाँ गूँज रही थी। इसाक न्यूटन, गैलीलियो से लेकर अरस्तू प्लेटो ही नहीं फ्रांसिस बेकन, वोल्तेयर, दिदेरो और मैकियावेली के विचारों से ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में नई उथल-पुथल मची हुई थी।''[7]

इस एज ऑफ रीजन में पुकार तो मानवीयता की उठी लेकिन हकीकत में ऐसे करुणाशून्य औद्योगिक समाज की स्थापना हुई जिसने पूँजी, माल और मुनाफे के लिए धरती और समुद्र में अधिकार की लड़ाइयों को जन्म दिया। पश्चिम में विचार की इस रोशनी ने पूर्व के तथाकथित अविकसित समाजों में दमन और शोषण के स्याह-अंधेरे अध्यायों की रचना की। इन संस्कृतियों की टकराहट के बीच लेखक यह स्थापित करने की कोशिश करता है कि किंवदंतियों के प्रमाण ढूँढने वाली संस्कृति में मनुष्य और प्रकृति की साझेदारी थी। मानवीय प्रेम और करुणा के स्रोत सूखे नहीं थे जबकि तर्क और विचार आश्रित पश्चिमी समाज आधुनिकता की दुहाई देता व्यक्ति केंद्रित हो रहा था। वह नृशंस और स्वार्थी था और इसी प्रक्रिया में उपनिवेशवाद का उत्स छिपा था।

अंग्रेजों के साथ-साथ कुछ स्वार्थ-प्रेरित हिंदुस्तानी भी थे जिन्होंने इस शोषण-चक्र को पूरा किया। हिंदुस्तान में सत्ताखोरों-व्यापारियों का ऐसा तबका मौजूद था जो अंग्रेजों का खैरख्वाह था। वे उनमें अपना भविष्य देख रहे थे। अंग्रेजों को खुश करने, उनका विश्वास हासिल करने को वे कुछ भी कर सकते थे। यहाँ तक कि व्यापारिक ठेके हासिल करने के लिए वे अपने परिवार की स्त्रियों को पेश करने से न चूकते। वे हिंदुस्तान की लूट में अंग्रेजों के भागीदार थे। लेखक ने संकेत किया है कि ये लोग अधिकतर उच्च जाति के हिंदू थे जो अपने रहन-सहन, खान-पान, पहनावे और भाषा, सभी में अंग्रेज होने की कोशिश कर रहे थे। अंग्रेजों के लौटने के बाद, इन्हीं सत्ताकामी चापलूसों का शासन भारतीय लोकतंत्र पर काबिज हो गया। इनके स्वप्न और आकांक्षाएँ अंग्रेज हैं। वह सबकुछ कल्पना और स्वप्न था।...एक मिथ क्रिएट किया कोलोनिलाइजेशन का, जिससे हमारे देश के उपनिवेशीकरण की जो अंतक्रिया है, उसको हम समझ सकें...

कहानी के सबसे विवादास्पद सांस्कृतिक प्रतीक हैं—गाय और साँड़ जिनके कारण इस कहानी का संबंध हिंदू पुनरुत्थान से जोड़ा गया। वारेन हेस्टिंग्स ने इंग्लैंड में अपने मित्र मिस्टर इम्हाफ को एक पत्र लिख और उसमें बताया कि यूरोप में जिन गाय-बैलों को 'कैटल' कहा जाता है यहाँ उनकी पूजा होती है। उनके नाम होते हैं और वे जानवर नहीं गूँगे मनुष्य हैं। इंग्लैंड जैसे औद्योगिक समाज के लिए जो मात्र पशु थे, भारतीय समाज में वे परिवार के जीवन का आधार थे। बच्चे उनसे छेड़-खानियाँ करते, घर की बेटी उनके गले लगकर रोती, वे परिवार के सुख-दु:ख के साथी थे। एक ओर औद्योगीकरण पश्चिम के मानवीय समाज को अमानवीय बना रहा था, दूसरी ओर ये गाय-बैल थे जो गैरमानवीय होते हुए भी मानवीय करुणा से संपन्न थे।

कहानी के रूपक और बहुस्तरीय यथार्थ की परतें

इस कहानी पर बातचीत तब तक अधूरी रहेगी जब तक कहानी के विभिन्न रूपकों को डिकोड न किया जाए। अपनी अन्य कहानियों की तरह यहाँ भी उदय प्रकाश यथार्थ के अनेक वृत्त एक साथ समेटने की कोशिश कर रहे हैं। कहानी का गठन वर्णनात्मक और किस्सागोई के अद्‌भुत तनाव से निर्मित है। कथाकार कुशल किस्सागो की तरह अतीत का वह पृष्ठ खोलता है जो वर्तमान यथार्थ की परतें उधेड़ने का उत्प्रेरक बनता है और फिर उसे छोटे-छोटे असंख्य ब्यौरों से भर देता है जिसमें अनेक रूपक अपनी अर्थ छवियों की अनगिनत संभावनाओं के साथ बिखरे पड़े हैं। लेखक ने स्वयं लिखा, 'असल में जब इतिहास में स्वप्न, यथार्थ में कल्पना, तथ्य में फैंटेसी और अतीत में भविष्य को मिलाया जाता है तो आख्यान में लीला शुरू होती है और एक ऐसी माया का जन्म होता है जिसका साक्षात्कार सत्य की खोज की ओर की एक यात्रा है।'[8]

इस कहानी का विन्यास आख्यानपरक है। इतिहास, कल्पना, यथार्थ मिथक सब उसके हिस्से हैं। एक थ्री-डी अनुभव की तरह पाठक स्वयं को उसके बीच महसूस करता है। इतिहास के पृष्ठों में अंकित गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स की छवि यहाँ अनेक रूपांतरणों से गुजरती है। लेखक ने विक्टोरिया मेमोरियल में रखे एक चित्र का विवरण दिया है जिसमें वारेन, उसकी पत्नी और एक नेटिव लड़की दिखाई पड़ती है। उदय कहानी में इस चित्र का प्रतीकात्मक प्रयोग करते हैं। वारेन की पत्नी परंपरावादी विक्टोरियन समाज का प्रतिनिधित्व करती है वह बार-बार वारेन को सचेत करती है—कि तुम जिस जाति और जिस देश के हो, वह एक विजेता देश है। नेटिव लड़की की संकल्पना चोखी के रूप में की गई है जो एक तरफ तो भारत की गुलाम जनता की प्रतीक है दूसरी ओर वह वारेन की लीला का अंग है। वारेन हेस्टिंग्स इन दोनों ध्रुवों के बीच स्वयं को उलझा हुआ पाता है कभी ऐसा लगता है कि वह भारतीय संस्कृति

से अभिभूत है तो कभी उसके भीतर का औपनिवेशिक गवर्नर जाग जाता है और वह सोचता है कि इन लोगों को कैसे गुलाम बनाया जाए।[8]

उदय प्रकाश उपनिवेशवाद की गुत्थी को सुलझाने के लिए कथा में कई प्रकार के खेल रचते हैं। औपनिवेशिकता जितना बड़ा सच है उससे मुक्ति की आकांक्षा भी उतना ही बड़ा सच है। प्लासी की लड़ाई में नवाब सिराजुद्दौला की हार मीर जाफर और राय दुर्लभ जैसे लोगों की गद्दारी के कारण हुई लेकिन लेखक ने उसी समय में एक जांबाज वफादार सिपहसालार की कल्पना की है और चोखी को उसकी बेटी बताया गया है। चोखी वारेन के रंग के रंगी जाकर भी उसके औपनिवेशिक इरादों को पहली चुनौती देती है। ऐसी ही एक और प्रतीकात्मकता इंपीरियल बग्घी उड़ा देने वाले साँड़ और 1857 की क्रांति के बीच भी दिखाई गई है।

कहानी में इस निरंतरता को सिद्ध करने के लिए उदय प्रकाश देश-काल के विविधमुखी वृत्त रचते हैं। कहानी का केंद्रीय पात्र वारेन हेस्टिंग्स होने के कारण कहानी का अपना विशिष्ट कालखंड है, जिसका परिवेश एवं स्थितियाँ, ऐतिहासिक तथ्यों और आँकड़ों से परिभाषित होती हैं। उस समय की शासन प्रणालियों, अंग्रेज़ नियुक्तियों, और अमीर हिंदुस्तानियों के व्यवहार आदि के जो विवरण दिए गए हैं, वे उस समय के सरकारी रिकॉर्ड से पुष्ट किए जा सकते हैं। भौतिक दृष्टि से उस काल-खंड की बहुत-सी बातें, सच्चाइयाँ कहानी का आधार हैं। अत: कहानी उस देश-काल के निश्चित वृत्त में स्थित है यह स्वीकारना होगा। इसके अतिरिक्त भारतीय इतिहास की स्मृतियाँ और परंपराएँ स्वयं में देश-काल के छोटे-बड़े वृत्त बनाती हैं। इन सबके साथ कहानी का उद्देश्य उसे उस धरातल तक ले जाता है जहाँ उत्तर-औपनिवेशिक समय और समाज की आलोचनात्मक पहचान उभरने लगती है।

उदय प्रकाश ग्लोबलाइजेशन को उपनिवेशवाद का नया संस्करण मानते हैं। इस कहानी में भी लेखक नें बहुत चतुराई से औपनिवेशिक एवं उत्तर औपनिवेशिक समानांतरता को संकेतित किया है। बाजार की जंग में पब्लिक और प्राइवेट कंपनियाँ जब एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा में होती है तो बाजी हमेशा प्राइवेट कंपनी ही मार ले जाती है। कहानी में लेखक उस औपनिवेशिक हकीकत का जिक्र करता है जहाँ ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी और फ्रांसीसी कंपनी के बीच यूरोप, अमेरिका और एशिया के समुद्रों, बाजारों और प्राकृतिक संसाधनों को हथियाने के लिए लड़ाई चल रही थी। भारतीय बाजारों पर कब्जा करने के लिए डच और पुर्तगाली भी दौड़ में थे। फिर भी ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी कामयाब रही क्योंकि वह एक प्राइवेट कंपनी थी जिसके अफसर और मुलाजिम ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाने के लिए जी-जान लगाते थे। इस पर लेखक ने टिप्पणी की है—यानी आज से ढाई सौ साल पहले भी एक विदेशी सार्वजनिक

कंपनी इंग्लैंड की एक प्राइवेट कंपनी से हार रही थी।''[10] उत्तर औपनिवेशिक दौर में भी दौलत की हवस से प्रेरित प्राइवेट कंपनियाँ हर सार्वजनिक ढाँचे को ध्वस्त कर स्थितियों को अपने पक्ष मोड़ने में कामयाब रही हैं। तमाम घोटाले और सेंसेक्स का संवेदी सूचकांक इन प्राइवेट कंपनियों के इशारे पर ही करवट लेता है।

उत्तर औपनिवेशिक मानसिकता के स्रोत औपनिवेशिक इतिहास के अनेकानेक संदर्भों में तलाशे जा सकते हैं। यह कहानी उसे ही संभव बनाती है। ऐसा ही एक प्रश्न भाषा का है जो केवल भाषा तक सीमित न होकर सामाजिक न्याय का प्रश्न बन जाता है। कहानी में चित्रित सत्ताकामी चापलूसों का शासन आजाद हिंदुस्तान आज भी ढो रहा है। यह उन जैसे नेटिवों का राज है जिनके स्वप्न और आकांक्षाएँ ही अंग्रेज नहीं उनकी भाषा भी अंग्रेजी है। आजादी के बाद अंग्रेजी जानने वाले ही सत्ता और समाज पर कब्जा कर के बैठ गए। आज स्थिति और भी गंभीर हो गई है जहाँ निचले-से-निचले तबके का आदमी यह मानने लगा है कि अंग्रेजी ही ज्ञान की कुँजी और सफलता की सीढ़ी है। यह दिमागी सरहदों की गुलामी है। औपनिवेशिक इतिहास की निरंतरता, जिसे उदय प्रकाश अपनी अनेकानेक कहानियों में बार-बार रेखाकित करते हुए अपील कर रहे हैं—

जो प्रजातियाँ लुप्त हो रही हैं,
यथार्थ मिटा रहा है जिनका अस्तित्व
हो सके तो हम उनकी हत्या में न हों शामिल
और संभव हो तो सँभालकर रख लें उनके चित्र...
ये चित्र अतीत के स्मृत्ति चिन्ह हैं...[11]

संदर्भ :

1. वारेन हेस्टिंग्स का साँड़, उदय प्रकाश : पाल गोमरा का स्कूटर पृ. 109
2. वही पृ. 105
3. वही पृ. 105
4. Bernard S. Cohn, Colonialism and its Forms of Knowledge, the British in India पृ. 45
5. वारेन... उदय प्रकाश, पालगोमरा... पृ. 114
6. वही पृ. 114
7. वही पृ. 115
8. वही पृ.
9. पूर्वग्रह अंक 125 (अप्रैल-जून, 2009) पृ. 38
10. वारेन हेस्टिंग्स का साँड़, उदय प्रकाश, पाल गोमरा का स्कूटर पृ. 112
11. पॉल गोमरा का स्कूटर, उदय प्रकाश, पॉल गोमरा का स्कूटर पृ.77